सूरह — एक कहानी

# सूरह इब्राहीम

## इब्राहीम

पूरा सफ़र — एक अच्छा कलिमा, एक अच्छे दरख़्त जैसा —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 14 • 52 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

### एक नज़र में सूरह

**किताबुन अन्ज़ल्नाहु इलैक लि-तुख़्रिजन्-नास मिनज़्-ज़ुलुमाति इलन्-नूर**
1. एक किताब जिसे हमने तुम्हारी तरफ़ उतारा ताकि तुम लोगों को अंधेरों से नूर की तरफ़ निकालो।

**ल-इन शकर्तुम ल-अज़ीदन्नकुम**
7. अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम्हें ज़रूर बढ़ा दूँगा।

**व मा लना अल्ला नतवक्कल 'अलल्-लाहि व क़द हदाना सुबुलना**
12. और हम अल्लाह पर भरोसा क्यों न करें जब कि उसने हमें हमारे रास्ते दिखा दिए?

**फ़-ला तलूमूनी व लूमू अन्फ़ुसकुम**
22. तो मुझे मलामत मत करो, अपने आप को मलामत करो।

**कलिमतन तय्यिबतन क-शजरतिन तय्यिबतिन अस्लुहा साबितुंव्-व फ़र्'उहा फ़िस्-समा**
24. एक अच्छा कलिमा एक अच्छे दरख़्त जैसा है जिसकी जड़ मज़बूत है और शाख़ें आसमान में।

**रब्बिज्-'अल्नी मुक़ीमस्-सलाति व मिन ज़ुर्रिय्यती; रब्बना व तक़ब्बल दु'आ**
40. मेरे रब, मुझे नमाज़ क़ायम करने वाला बना, और मेरी औलाद में से भी; हमारे रब, और मेरी दुआ क़ुबूल फ़रमा।

## अंधेरों से नूर की तरफ़

बेटा, ये सूरह वही के पूरे मक़्सद को एक जुमले में बयान करते हुए खुलती है:

'**अलिफ़ लाम रा। किताबुन अन्ज़ल्नाहु इलैक लि-तुख़्रिजन्-नास मिनज़्-ज़ुलुमाति इलन्-नूर** — **एक किताब जिसे हमने तुम्हारी तरफ़ उतारा ताकि तुम लोगों को अंधेरों से नूर की तरफ़ निकालो** — **बि-इज़्नि रब्बिहिम इला सिरातिल्-'अज़ीज़िल्-हमीद** — उनके रब के इज़्न से, उस ग़ालिब, क़ाबिल-ए-तारीफ़ के रास्ते की तरफ़।'

बेटा, एक बात ग़ौर कीजिए जो उलमा मुद्दत से इस जुमले के बारे में बताते हैं, जो

क़ुरआन में कई बार आता है। '**अज़्-ज़ुलुमात**' — **अंधेरे** — हमेशा **जमा** है। '**अन्-नूर**' — **नूर** — हमेशा **वाहिद** है।

क्योंकि **खोने के बे-शुमार तरीक़े हैं, बेटा, और मिलने का सिर्फ़ एक।** बातिल की हज़ार शाख़ें हैं, हर एक दूसरी की मुख़ालिफ़। हक़ एक ही सड़क है।

'**व लक़द अर्सल्ना मूसा बि-आयातिना अन अख़्रिज क़ौमक मिनज़्-ज़ुलुमाति इलन्-नूर** — और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ भेजा: **अपनी क़ौम को अंधेरों से नूर की तरफ़ निकाल — व ज़क्किर्हुम बि-अय्यामिल्-लाह — और उन्हें अल्लाह के दिनों की याद दिला।**'

बेटा, 'अय्यामिल्लाह' — **अल्लाह के दिन**। उलमा ने इन्हें उन दिनों के तौर पर समझाया जिन पर उसके एहसान आए और उसके अज़ाब उतरे: वो दिन जब समंदर फटा, वो दिन जब एक ज़ालिम डूबा, वो दिन जब एक क़ौम बचाई गई।

और बेटा, वो हिदायत अपने लिए लीजिए: **अपने आप को अपने अल्लाह के दिन याद दिलाइए।** वो वक़्त जब आपको किसी चीज़ से बचाया गया। वो दुआ जो क़ुबूल हुई। वो आफ़त जो आपके पास से गुज़र गई। हम उन्हें कितनी जल्दी भूल जाते हैं, और उन में से हर एक एक सबूत है।

और फिर सूरह अपना मरकज़ी उसूल देती है, बेटा — क़ुरआन के सब से ज़्यादा नक़्ल किए जाने वाले वादों में से एक:

'**व इज़ त-अज़्ज़न रब्बुकुम** — और जब तुम्हारे रब ने **एलान** किया — **ल-इन शकर्तुम ल-अज़ीदन्नकुम — अगर तुम शुक्र करोगे, तो मैं तुम्हें ज़रूर बढ़ा दूँगा — व ल-इन कफ़र्तुम इन्न 'अज़ाबी ल-शदीद — और अगर तुम ना-शुक्री करोगे, तो बेशक मेरा अज़ाब सख़्त है।**'

बेटा, दोनों हिस्सों को ग़ौर से देखिए, क्योंकि वो बराबर नहीं हैं, और वो ना-बराबरी रहमत है।

शुक्र के लिए: '**ल-अज़ीदन्नकुम**' — मैं तुम्हें **ज़रूर बढ़ा दूँगा**। क़त'ई, पुर-ज़ोर, और एक ज़ाती अमल के तौर पर बयान: **मैं** करूँगा।

ना-शुक्री के लिए, वो ये नहीं कहते 'मैं तुम्हें सज़ा दूँगा'। वो कहते हैं: 'मेरा अज़ाब सख़्त है' — **एक हक़ीक़त का बयान, फ़ासले पर रखा हुआ, बिना तुम्हें उसका निशाना बनाए।**

बेटा, और ग़ौर कीजिए कि पहले हिस्से में क्या **मुअय्यन नहीं** किया गया: **क्या** बढ़ाया जाएगा। वो बस कहते हैं 'मैं तुम्हें बढ़ा दूँगा'। तो **किसी भी चीज़ पर शुक्र तुम्हें बढ़ाता है** — कभी उसी चीज़ में, कभी किसी बेहतर में, कभी उस पर क़नाअत में जो तुम्हारे पास पहले से है।

और फिर, बेटा, वो आयत जो हर हिसाब ख़त्म कर देती है: '**इन तक्फ़ुरू अन्तुम व मन फ़िल्-अर्ज़िं जमी'आ — अगर तुम कुफ़्र करो — तुम और जो कोई ज़मीन पर है, सब मिल कर — फ़-इन्नल्-लाह ल-ग़निय्युन हमीद — तो बेशक, अल्लाह बे-नियाज़ और क़ाबिल-ए-तारीफ़ है।**'

बेटा, अगर हर वो इंसान जो कभी जीया एक ही लम्हे में उनका इनकार कर दे, तो इस से उनका कुछ कम न होगा। **उनकी फिर भी तारीफ़ होती — फ़रिश्तों से, पहाड़ों से, और वुजूद की हर दूसरी चीज़ से। हमारी इबादत कभी उनके फ़ायदे के लिए न थी।**

## हम उस पर भरोसा क्यों न करें?

फिर सूरह बयान करती है कि रसूलों के साथ क्या बर्ताव हुआ, बेटा, और ये हर जगह एक जैसा है: '**फ़-रद्दू ऐदियहुम फ़ी अफ़्वाहिहिम** — उन्होंने अपने हाथ अपने मुँहों की तरफ़ लौटा दिए' — ग़ुस्से का इशारा, या चुप कराने का — '**व क़ालू इन्ना कफ़र्ना बिमा उर्सिल्तुम बिह** — और कहा: **हम उस का इनकार करते हैं जिस के साथ तुम भेजे गए।**'

और रसूलों ने ऐसे अल्फ़ाज़ से जवाब दिया जो याद कर लेने लायक़ हैं: '**अ फ़िल्लाहि शक्कुन फ़ातिरिस्-समावाति वल्-अर्ज़** — **क्या अल्लाह के बारे में शक हो सकता है, जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है? यद्'ऊकुम लि-यग़्फ़िर लकुम मिन ज़ुनूबिकुम — वो तुम्हें इस लिए बुलाता है ताकि तुम्हारे गुनाह**

**बख़्श दे।'**

बेटा, दावत का वो बयान देखिए। **अल्लाह लोगों को बोझ डालने के लिए नहीं बुलाते, बल्कि उन्हें बख़्शने के लिए।** यही इस पुकार का मक़्सद है।

उनके मुख़ालिफ़ों ने उन्हें निकालने या उनके पुराने तरीक़ों पर ज़बरदस्ती लौटाने की धमकी दी। और रसूलों ने जवाब दिया:

**'व मा लना अल्ला नतवक्कल 'अलल्-लाहि व क़द हदाना सुबुलना — और हम अल्लाह पर भरोसा क्यों न करें जब कि उसने हमें हमारे रास्ते दिखा दिए? व ल-नस्बिरन्न 'अला मा आज़ैतुमूना — और हम ज़रूर सब्र करेंगे उस पर जो तुम हमें अज़ियत देते हो — व 'अलल्-लाहि फ़ल्-यतवक्कलिल्-मुतवक्किलून — और अल्लाह ही पर भरोसा करने वालों को भरोसा करना चाहिए।'**

बेटा, उस पहली लाइन की मंतिक़ महसूस कीजिए। **उसने हमें पहले ही हिदायत दे दी — उसने पहले ही हमारे लिए सब से बड़ी चीज़ कर दी — तो हम छोटी चीज़ों में उसपर भरोसा कैसे न करें?**

बेटा, इसे अपनी फ़िक्रों पर लगाइए। उसने आपको इस्लाम की तरफ़ हिदायत दी। उसने आपके दिल में ईमान रखा जब लाखों को वो कभी न मिला। **अगर उसने आपके लिए वो कर दिया, तो क्या आपका रिज़्क़ वाक़ई उसके बस से बाहर है? क्या आपकी मुश्किल?**

और दो चीज़ें जो जोड़ी गईं ग़ौर कीजिए: **तवक्कुल** और **सब्र**। अल्लाह पर भरोसा, और उस अज़ियत पर सब्र जो फिर भी आती है। **भरोसा का मतलब ये नहीं कि अज़ियत रुक जाए। इसका मतलब ये है कि तुम उस के होते हुए खड़े रह सकते हो।**

## शैतान की तक़रीर

फिर सूरह क़ियामत के दिन का एक मंज़र बयान करती है, बेटा — और ये क़ुरआन के सब से रोंगटे खड़े करने वाले हिस्सों में से एक है, क्योंकि उस में ख़ुद शैतान खड़ा हो कर बात करता है।

**'व क़ालश्-शैतानु लम्मा क़ुज़ियल्-अम्र — और शैतान कहेगा, जब मामला चुका दिया जाएगा:'**

**'इन्नल्-लाह व'अदकुम व'अ्दल्-हक़्क़ि व व'अत्तुकुम फ़-अख़्लफ़्तुकुम — बेशक, अल्लाह ने तुम से सचा वादा किया। और मैंने तुम से वादा किया — और मैंने तुम से वादा-ख़िलाफ़ी की।'**

**'व मा काना लिय 'अलैकुम मिन सुल्तानिन — और मेरा तुम पर कोई ज़ोर न था — इल्ला अन द'औतुकुम फ़स्तजब्तुम ली — सिवाए इसके कि मैंने तुम्हें बुलाया और तुमने मेरी बात मान ली।'**

**'फ़-ला तलूमूनी व लूमू अन्फ़ुसकुम — तो मुझे मलामत मत करो; अपने आप को मलामत करो।'**

**'मा अना बि-मुस्रिख़िकुम व मा अन्तुम बि-मुस्रिख़िय्य — न मैं तुम्हारी फ़रियाद सुन सकता हूँ, न तुम मेरी — इन्नी कफ़र्तु बिमा अश्रक्तुमूनि मिन क़ब्ल** — बेशक, मैं उस से बरी हूँ कि तुमने मुझे पहले अल्लाह का शरीक ठहराया।'

बेटा, उस तक़रीर को धीरे से फिर पढ़िए, क्योंकि इस जैसा और कुछ नहीं।

**इंसानियत का दुश्मन सब के सामने खड़ा हो कर, बिना किसी मजबूरी के, इक़रार करता है: मेरा तुम पर कोई ज़ोर न था। मैंने बस बुलाया, और तुम आ गए। मुझे मलामत मत करो — अपने आप को करो।**

बेटा, और समझिए कि अल्लाह ने इसे पहले से क्यों दर्ज किया। **ये इस लिए कि हम इसे अभी सुनें, जब तक उस पर अमल करने का वक़्त बाक़ी है।** हर बहाना जो हम इस्तेमाल करने का मंसूबा बनाते हैं — 'मुझे गुमराह किया गया', 'मुझ पर असर हुआ', 'माहौल ऐसा था', 'मैं कुछ कर ही न सकता था' — ठीक उस हस्ती के हाथों ढह जाता है जिसे हम इल्ज़ाम देने वाले थे।

और अल्फ़ाज़ ग़ौर कीजिए: 'द'औतुकुम फ़स्तजब्तुम ली' — मैंने **बुलाया** और तुमने **जवाब दिया**। **दावत उसकी थी; जवाब तुम्हारा।** बेटा, सात लफ़्ज़ों में गुनाह का पूरा निज़ाम।

और फिर उसका आख़िरी, सर्द बयान: 'मा अना बि-मुस्रिख़िकुम' — मैं अब तुम्हारी मदद नहीं कर सकता, और तुम मेरी नहीं। **बातिल की दोस्ती ठीक उतनी देर चलती है जितनी देर वो काम की हो।**

## एक अच्छा कलिमा एक अच्छे दरख़्त जैसा

और अब, बेटा, वो मिसाल जो इस सूरह को उसकी ख़ूबसूरती देती है:

'**अ लम तर कैफ़ ज़रबल्-लाहु मसलन कलिमतन तय्यिबतन क-शजरतिन तय्यिबह — क्या तुमने ग़ौर नहीं किया कि अल्लाह कैसे मिसाल देते हैं: एक अच्छा कलिमा एक अच्छे दरख़्त जैसा है — अस्लुहा साबितुंव्-व फ़र्'उहा फ़िस्-समा — जिसकी जड़ मज़बूती से जमी हुई है और जिसकी शाख़ें आसमान में हैं — तुअ्ती उकुलहा कुल्ल हीनिम्-बि-इज़्नि रब्बिहा — वो अपना फल हर वक़्त देता है, अपने रब के इज़्न से।**'

बेटा, उलमा ने — और बहुत से सलफ़ ने — 'अच्छे कलिमे' को तौहीद के कलिमे के तौर पर समझाया: '**ला इलाह इल्लल्लाह**'। और दरख़्त ख़ुद मोमिन है, और वो ईमान जो उस में बोया गया।

अब इस दरख़्त की तीन सिफ़ात देखिए, क्योंकि हर एक बयान करती है कि अस्ली ईमान एक शख़्स में क्या करता है।

**एक** — 'अस्लुहा साबित': उसकी जड़ **मज़बूत** है। ज़मीन के नीचे, ना-देखी, थामे हुई। बेटा, **जड़ वो हिस्सा है जिसकी कोई तस्वीर नहीं लेता और जिसकी कोई तारीफ़ नहीं करता।** वो तुम्हारी निजी इबादत है, तुम्हारी इख़्लास, वो नमाज़ें जिनके बारे में कोई नहीं जानता, तुम्हारा अल्लाह के साथ रिश्ता जब दरवाज़ा बंद हो। कमज़ोर जड़ वाला दरख़्त पहली संजीदा आँधी में गिर जाता है, चाहे ज़मीन के ऊपर वो कितना ही शान-दार लगे।

**दो** — 'व फ़र्'उहा फ़िस्-समा': उसकी शाख़ें **आसमान में** हैं। बेटा, तवाज़ुन ग़ौर कीजिए: **जड़ जितनी गहरी नीचे जाती है, शाख़ें उतनी ही ऊँची ऊपर पहुँचती हैं।** एक शख़्स जो इख़्लास में मज़बूती से जमा हो अल्लाह की नज़र में बुलंद होता है, और

उसके अमल ऊपर चढ़ते हैं।

**तीन** — 'तुअ्ती उकुलहा कुल्ल हीन': वो अपना फल **हर वक़्त** देता है। मौसम के हिसाब से नहीं। जब सुविधा हो तब नहीं। बेटा, **यही एक अस्ली मोमिन की निशानी है: वो अपनी ज़िंदगी के हर मौसम में काम का होता है।** ग़ुर्बत में और दौलत में, जवानी और बुढ़ापे में, अच्छे वक़्त और ग़म में — उस से कुछ न कुछ फ़ायदे का निकलता रहता है।

बेटा, ख़ुद से ईमानदारी से पूछिए: **क्या कोई तुम्हारे दरख़्त से खा रहा है?** एक हौसला बढ़ाने वाला लफ़्ज़, एक दुआ, किसी काम में मदद, आगे पहुँचाया गया इल्म, एक बोझ हल्का किया गया — तुम से कौनसा फल गिरता है?

और फिर उसका उल्टा: '**व मसलु कलिमतिन ख़बीसतिन क-शजरतिन ख़बीसतिनिज्-तुस्सत मिन फ़ौक़िल्-अर्ज़ि मा लहा मिन क़रार — और एक बुरे कलिमे की मिसाल एक बुरे दरख़्त जैसी है, जो ज़मीन की सतह से उखाड़ दिया गया, जिसका कोई ठहराव नहीं।**'

बेटा, 'इज्तुस्सत' — उखाड़ फेंका गया। **उस में गहराई बिल्कुल नहीं; सब से हल्का झटका उसे निकाल देता है।** यही बातिल है: ये तेज़ी से बढ़ सकता है और कुछ अर्से तक हरा दिख सकता है, मगर उसे नीचे थामने को कुछ नहीं।

और फिर, बेटा, इस मिसाल से जुड़ा वादा आता है — और ये क़ुरआन के अज़ीम सुकूनों में से एक है:

'**युसब्बितुल्-लाहुल्-लज़ीन आमनू बिल्-क़ौलिस्-साबिति फ़िल्-हयातिद्-दुन्या व फ़िल्-आख़िरह — अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए, मज़बूत कलिमे के साथ साबित-क़दम रखते हैं, दुनियावी ज़िंदगी में और आख़िरत में।**'

बेटा, 'युसब्बितु' — वो उन्हें **मज़बूत** करते हैं, उन्हें ठहराते हैं, उन्हें लंगर देते हैं।

**इस** ज़िंदगी में: जब एक शख़्स के नीचे ज़मीन हिलती है — एक नुक़सान, एक धोका, एक ख़ौफ़ — मोमिन उड़ नहीं जाता, क्योंकि कोई चीज़ उसे थामे हुई है।

और **आख़िरत** में: नबी ﷺ ने समझाया कि ये आयत क़ब्र के सवाल की तरफ़ इशारा

करती है, जब एक शख़्स से पूछा जाता है कि उसका रब कौन है, उसका दीन क्या है, और उस शख़्स के बारे में जो उस की तरफ़ भेजा गया। मोमिन जवाब देता है, और **अल्लाह ही हैं जो उस लम्हे उसे साबित-क़दम रखते हैं।**

बेटा, इस के बारे में सोचिए। **जो जवाब तुम क़ब्र में दोगे वो ऐसी चीज़ नहीं जो तुम पहले से याद कर के सुना सको। वो तुम्हें अल्लाह देते हैं, इस बुनियाद पर कि तुम कैसे जीए।** मज़बूत कलिमा तुम्हें उस लम्हे ठहराता है जब कोई और चीज़ तुम तक पहुँच ही नहीं सकती।

## जिन्होंने नेमत को बदल दिया

फिर सूरह उन लोगों का बयान करती है जिन्हें अल्लाह की नेमत मिली और उन्होंने उसे इनकार के तौर पर लौटाया:

'**अ लम तर इलल्-लज़ीन बद्दलू नि'अ्मतल्-लाहि कुफ़्रंव्-व अहल्लू क़ौमहुम दारल्-बवार** — क्या तुमने उन पर ग़ौर नहीं किया जिन्होंने **अल्लाह की नेमत को कुफ़्र से बदल दिया** और अपनी क़ौम को तबाही के घर में उतार दिया?'

बेटा, 'बद्दलू नि'अ्मतल्-लाहि कुफ़्रन' — उन्होंने एक नेमत का सौदा ना-शुक्री से किया। और दूसरा हिस्सा ग़ौर कीजिए: वो अपनी **क़ौम** को भी अपने साथ ले डूबे। **जो लीडर भटकते हैं वो अकेले नहीं गिरते।**

फिर अल्लाह अपने रसूल ﷺ को हिदायत देते हैं कि मोमिनीन के साथ कैसा सुलूक करें: '**क़ुल लि-'इबादियल्-लज़ीन आमनू युक़ीमुस्-सलात व युन्फ़िक़ू मिम्मा रज़क़्नाहुम सिर्रंव्-व 'अलानियतम्-मिन क़ब्लि अंय्यअ्तिय यौमुल्-ला बै'उन फ़ीहि व ला ख़िलाल** — मेरे मोमिन बंदों से कहो कि नमाज़ क़ायम करें और जो हमने उन्हें दिया उस में से ख़र्च करें, **छुप कर और खुले-आम**, उस से पहले कि वो दिन आए **जिस में न कोई सौदा है न दोस्ती।**'

बेटा, 'ला बै'उन फ़ीहि व ला ख़िलाल' — न **ख़रीद-फ़रोख़्त** और न **दोस्ती**। उस दिन तुम अपने आप को ख़रीद कर नहीं निकाल सकते, और कोई ता'ल्लुक़ काम न आएगा। **वो दोनों चीज़ें जिन पर हम यहाँ टिकते हैं — पैसा और वास्ते — नाम ले कर**

**मंसूख़ कर दी गईं।**

और फिर सूरह फिर नेमतें गिनाती है — आसमान और ज़मीन, बारिश, फल, कश्तियाँ जो उसके हुक्म से चलती हैं, नहरें, सूरज और चाँद '**दाइबैन**' — मुस्तक़िल चलते हुए, कभी न रुकते — और रात और दिन।

'**व अताकुम मिन कुल्लि मा सअल्तुमूह — और उसने तुम्हें हर उस चीज़ में से दिया जो तुमने उस से माँगी — व इन तअ्उद्दू नि'अ्मतल्-लाहि ला तुह्सूहा** — और अगर तुम अल्लाह की नेमत गिनो तो शुमार न कर सकोगे — **इन्नल्-इंसान ल-ज़लूमुन कफ़्फ़ार — बेशक, इंसान बड़ा ही ज़ालिम, बड़ा ही ना-शुक्रा है।**'

बेटा, वो आख़िरी लाइन सख़्त है, और ये सची है। **हम ऐसे एहसानों से घिरे हुए हैं जिन्हें हम गिन नहीं सकते, और हमारी बुनियादी हालत ये है कि हम उस एक चीज़ को देखते हैं जो नहीं है।**

## इब्राहीम की दुआ

और अब, बेटा, वो हिस्सा जो इस सूरह को उसका नाम देता है — इब्राहीम (अलैहि0) की दुआ, एक ख़ाली वादी में खड़े हो कर की गई।

'**व इज़ क़ाल इब्राहीमु रब्बिज्-'अल हाज़ल्-बलद आमिना — और जब इब्राहीम ने कहा: मेरे रब, इस शहर को अमन वाला बना — वज्नुब्नी व बनिय्य अन नअ्बुदल्-अस्नाम — और मुझे और मेरे बेटों को बुतों की इबादत से दूर रख।**'

बेटा, उस दूसरी दरख़्वास्त पर रुकिए। ये **इब्राहीम** हैं — वो आदमी जिसने अपने हाथों से बुत तोड़े, जिसे एक बुत के सामने झुकने के बजाए आग में डाला गया। और वो अल्लाह से माँग रहे हैं कि उन्हें बुतों से दूर रखें।

बेटा, यही अस्ली ईमान का अंदाज़ है। **उन्होंने ख़ुद को महफ़ूज़ न समझा।** उलमा ने कहा: **अगर इब्राहीम ने अपने लिए शिर्क का ख़ौफ़ किया, तो हम कौन होते हैं कि अपने आप को महफ़ूज़ समझें?**

'**रब्बि इन्नहुन्न अज़्लल्न कसीरम्-मिनन्-नास** — मेरे रब, बेशक इन्होंने बहुत से

लोगों को गुमराह किया।'

और फिर, बेटा, वो दुआ आती है जो समझाती है कि मक्का ऐसा क्यों है जैसा है:

'**रब्बना इन्नी अस्कन्तु मिन ज़ुर्रिय्यती बि-वादिन ग़ैरि ज़ी ज़र्'इन 'इन्द बैतिकल्-मुहर्रम — हमारे रब, मैंने अपनी कुछ औलाद को एक बे-खेती वाली वादी में, तेरे मुहतरम घर के पास बसा दिया — रब्बना लि-युक़ीमुस्-सलाह — हमारे रब, ताकि वो नमाज़ क़ायम करें।**'

बेटा, वो वजह ग़ौर कीजिए जो उन्होंने अपनी बीवी और दूध-पीते बेटे को एक बंजर वादी में छोड़ने की दी: 'लि-युक़ीमुस्-सलाह' — **ताकि वहाँ नमाज़ क़ायम हो।** यही पूरा मक़्सद था।

'**फ़ज्'अल अफ़्इदतम्-मिनन्-नासि तह्वी इलैहिम — तो लोगों में से कुछ दिलों को उनकी तरफ़ माइल कर दे — वर्ज़ुक़्हुम मिनस्-समराति ल'अल्लहुम यश्कुरून** — और उन्हें फलों से रिज़्क़ दे, ताकि वो शुक्र करें।'

बेटा, देखिए उन्होंने क्या माँगा और फिर आज मक्का को देखिए। '**दिलों को उनकी तरफ़ माइल कर दे**' — और चौदह सदियों से, लाखों दिल ज़मीन के हर कोने से उस वादी की तरफ़ खिंचे चले आ रहे हैं। लोग उसे देखते ही रो पड़ते हैं। **ये एक आदमी की दुआ है जिसका जवाब आज भी आ रहा है।**

और 'वर्ज़ुक़्हुम मिनस्-समरात' — उन्हें **फलों** का रिज़्क़ दे, एक ऐसी वादी में जहाँ न मिट्टी थी न पानी। और आज मक्का जाइए और देखिए कि पूरी दुनिया की पैदावार उसके बाज़ारों में पहुँचती है।

बेटा, ये वो है जो एक दुआ कर सकती है। **उनके पास कुछ न था — न शहर, न पानी, न खेती, न लोग। उनके पास अल्फ़ाज़ और यक़ीन थे। और नतीजा आज भी चल रहा है।**

'**रब्बना इन्नक तअ्लमु मा नुख़्फ़ी व मा नु'अ्लिन** — हमारे रब, बेशक तू जानता है जो हम छुपाते हैं और जो ज़ाहिर करते हैं — **व मा यख़्फ़ा 'अलल्-लाहि मिन शै-इन फ़िल्-अर्ज़ि व ला फ़िस्-समा** — और अल्लाह से ज़मीन या आसमान में कोई चीज़

छुपी नहीं।'

**'अल्-हम्दु लिल्लाहिल्-लज़ी वहब ली 'अलल्-किबरि इस्माईल व इस्हाक़ — तारीफ़ अल्लाह के लिए, जिसने मुझे बुढ़ापे में इस्माईल और इस्हाक़ अता किए — इन्न रब्बी ल-समी'उद्-दु'आ — बेशक, मेरा रब दुआ सुनने वाला है।'**

बेटा, और अब उनकी आख़िरी दरख़्वास्तें — और यही वो हैं जिन्हें अपना बना लीजिए:

**'रब्बिज्-'अल्नी मुक़ीमस्-सलाति व मिन ज़ुर्रिय्यती — मेरे रब, मुझे नमाज़ क़ायम करने वाला बना, और मेरी औलाद में से भी — रब्बना व तक़ब्बल दु'आ — हमारे रब, और मेरी दुआ क़ुबूल फ़रमा।'**

बेटा, ग़ौर कीजिए एक बूढ़ा आदमी ग़ैर-मामूली क़ुरबानियों से भरी ज़िंदगी के आख़िर में क्या माँगता है: कि वो नमाज़ क़ायम करने वाला हो। इज़्ज़त नहीं, आराम नहीं, और औलाद तक नहीं। **नमाज़ — अपने लिए, और अपने बाद की नस्लों के लिए।**

**'रब्बनग़्-फ़िर ली व लि-वालिदय्य व लिल्-मुअ्मिनीन यौम यक़ूमुल्-हिसाब — हमारे रब, मुझे और मेरे वालिदैन को और मोमिनीन को बख़्श दे उस दिन जब हिसाब क़ायम होगा।'**

बेटा, देखिए उनकी दुआ ख़त्म होते होते कैसे फैलती है: ख़ुद, अपने वालिदैन, और फिर **तमाम** मोमिनीन। **अपनी दुआओं को यूँ ख़त्म करना सीखिए — अपने आप और अपने घर पर मत रुको।**

## ये मत समझो कि अल्लाह बे-ख़बर हैं

और सूरह ख़त्म होती है, बेटा, हर उस शख़्स के लिए एक तंबीह के साथ जिस पर ज़ुल्म हुआ, और हर उस के लिए जो ज़ुल्म कर रहा है।

**'व ला तह्सबन्नल्-लाह ग़ाफ़िलन 'अम्मा यअ्मलुज़्-ज़ालिमून — और हरगिज़ मत समझो कि अल्लाह उस से बे-ख़बर हैं जो ज़ालिम करते हैं — इन्नमा**

**युअख़्ख़िरुहुम लि-यौमिन तश्ख़सु फ़ीहिल्-अब्सार — वो उन्हें सिर्फ़ एक ऐसे दिन तक मोहलत देते हैं जब आँखें दहशत से फट जाएँगी।'**

बेटा, ये आयत हर उस शख़्स के लिए है जिसने ज़ुल्म को बे-जवाब जाते देखा और सोचा कि क्या कोई हिसाब रख रहा है।

**देर ग़ायब होना नहीं। ये इजाज़त नहीं। ये भूल-पन नहीं। ये एक तय-शुदा मुलाक़ात है।**

'**मुह्ति'ईन मुक़्निअ'ई रुऊसिहिम ला यर्तद्दु इलैहिम तर्फ़ुहुम व अफ़्इदतुहुम हवा** — दौड़ते हुए, सर उठाए, उनकी निगाह उनकी तरफ़ लौटती नहीं, **और उनके दिल ख़ाली।'**

बेटा, 'अफ़्इदतुहुम हवा' — उनके दिल **हवा** हैं, खोखले, हर चीज़ से ख़ाली। ऐसी दहशत जो इतनी मुकम्मल हो कि दिल में कुछ बचा ही न रहे।

और फिर अल्लाह अपने रसूल ﷺ से कहते हैं कि लोगों को एक ऐसे दिन से ख़बरदार करें जब ज़ालिम गिड़गिड़ाएँगे: '**रब्बना अख़्ख़िर्ना इला अजलिन क़रीबिन नुजिब द'अ्वतक व नत्तबि'इर्-रुसुल — हमारे रब, हमें थोड़ी मुद्दत के लिए मोहलत दे; हम तेरी पुकार का जवाब देंगे और रसूलों की पैरवी करेंगे।'**

और जवाब: '**अ व लम तकूनू अक़्सम्तुम मिन क़ब्लु मा लकुम मिन ज़वाल — क्या तुमने पहले क़सम न खाई थी कि तुम कभी (इस दुनिया से) न जाओगे?**'

बेटा, वो यूँ जीए थे गोया वो कभी रुख़्सत न होंगे — कह कर नहीं, बल्कि यूँ बनाते, मंसूबा करते और जमा करते हुए गोया कोई अंजाम ही न हो। **और अल्लाह उसे क़सम कहते हैं।**

और सूरह की आख़िरी आयत, बेटा:

'**हाज़ा बलाग़ुल्-लिन्-नासि व लि-युन्ज़रू बिही — ये लोगों के लिए एक पैग़ाम की तरसील है, ताकि वो इस से ख़बरदार किए जाएँ — व लि-यअ्लमू अन्नमा हुव इलाहुंव्-वाहिद — और ताकि वो जान लें कि वो एक ही माबूद है — व लि-यज़्ज़क्कर उलुल्-अल्बाब — और ताकि अक़्ल वाले नसीहत पकड़ें।'**

बेटा, सूरह यूँ ख़त्म होती है: **ये किताब एक तरसील है। ये तुम्हारे हाथ में सौंपी जा चुकी। अब तुम इस का क्या करते हो, ये तुम्हारा मामला है।**

और देखिए इसने क्या पहुँचाया: कि शुक्र तुम्हें बढ़ाता है, कि शैतान ख़ुद खुले-आम इक़रार करेगा कि उसका तुम पर कोई ज़ोर न था, कि ईमान एक दरख़्त है जिसकी जड़ तुम्हें वहाँ सँभालनी है जहाँ कोई देख नहीं सकता, कि अल्लाह मोमिन को ठीक उस वक़्त ठहराते हैं जब उसे सब से ज़्यादा ज़रूरत होती है, कि एक आदमी की ख़ाली वादी में की गई दुआ आज भी दुनिया भर के दिलों को खींच रही है — और कि **कोई ज़ुल्म नज़र-अंदाज़ नहीं किया जा रहा, सिर्फ़ उसका वक़्त मुक़र्रर है।**

## इस सूरह से क्या सीखा

**1.** अंधेरे हमेशा जमा हैं; नूर हमेशा एक। खोने के बे-शुमार रास्ते हैं और घर का एक।

**2.** अपने आप को अपने 'अल्लाह के दिन' याद दिलाओ — वो बचाव जो तुम्हें पहले मिल चुके।

**3.** 'अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम्हें ज़रूर बढ़ा दूँगा' — और वो बताते नहीं किस चीज़ में, तो किसी भी चीज़ पर शुक्र तुम्हें बढ़ाता है।

**4.** उसने तुम्हें इस्लाम की हिदायत दी — तो तुम किसी छोटी चीज़ में उस पर शक क्यों करोगे?

**5.** शैतान ख़ुद खड़ा हो कर कहेगा: मैंने सिर्फ़ बुलाया, और तुमने जवाब दिया — तो अपने आप को मलामत करो।

**6.** वो जड़ सँभालो जिसे कोई नहीं देखता, और हर मौसम में फल दो — पूछो कि क्या कोई तुम्हारे दरख़्त से खा रहा है।

**7.** इब्राहीम ने अपने लिए शिर्क का ख़ौफ़ किया, और सिर्फ़ ये माँगा कि नमाज़ क़ायम करने वाला बने — और ज़ालिम को दी गई अल्लाह की देर एक मुलाक़ात है, ग़ैर-हाज़िरी नहीं।

रब्बिज्-'अल्नी मुक़ीमस्-सलाति व मिन ज़ुर्रिय्यती, रब्बना व तक़ब्बल दु'आ।

आमीन।